

मार्क चागल

महान चित्रकार



मार्क चागल जो सुंदर और अजीब चित्र बनाते थे उनके लिए पूरा जीवन ही उनकी प्रेरणा थी. उन्होंने लोगों को, खेतों, जानवरों, धार्मिक प्रतीकों, दर्शन और भावनाओं को चित्रित किया. उस तरह का काम किसी अन्य कलाकार ने पहले कभी नहीं किया.

यह चित्र पुस्तक एक विनम्र यहूदी परिवार में पैदा हुए मार्क चागल के जीवन का वर्णन करती है. वो बीसवीं सदी में एक रूसी शहर में पैदा हुए और फिर दुनिया के सबसे प्रसिद्ध कलाकारों में से एक बने.



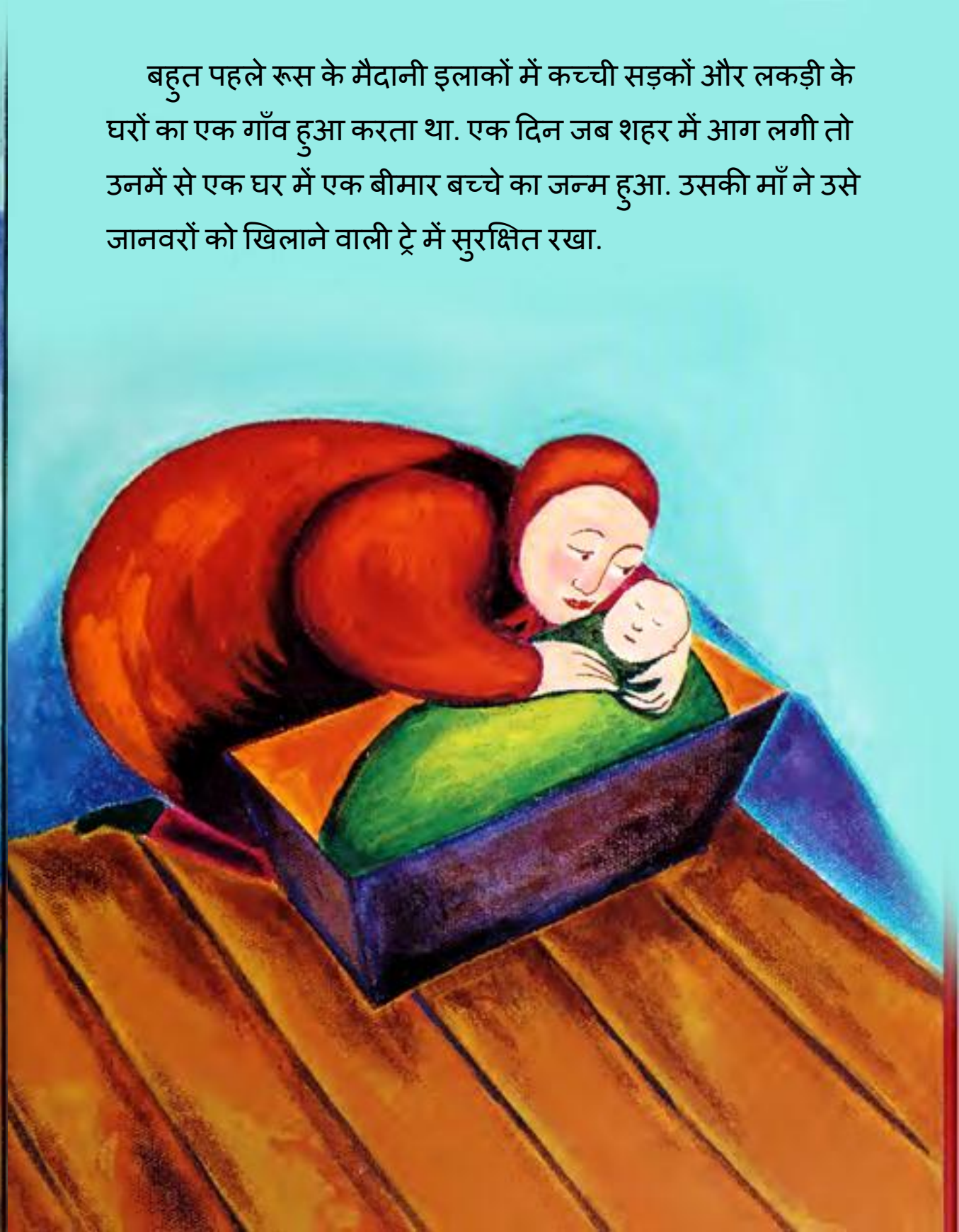
मार्क चागल

महान चित्रकार





बहुत पहले रूस के मैदानी इलाकों में कच्ची सड़कों और लकड़ी के घरों का एक गाँव हुआ करता था. एक दिन जब शहर में आग लगी तो उनमें से एक घर में एक बीमार बच्चे का जन्म हुआ. उसकी माँ ने उसे जानवरों को खिलाने वाली ट्रे में सुरक्षित रखा.

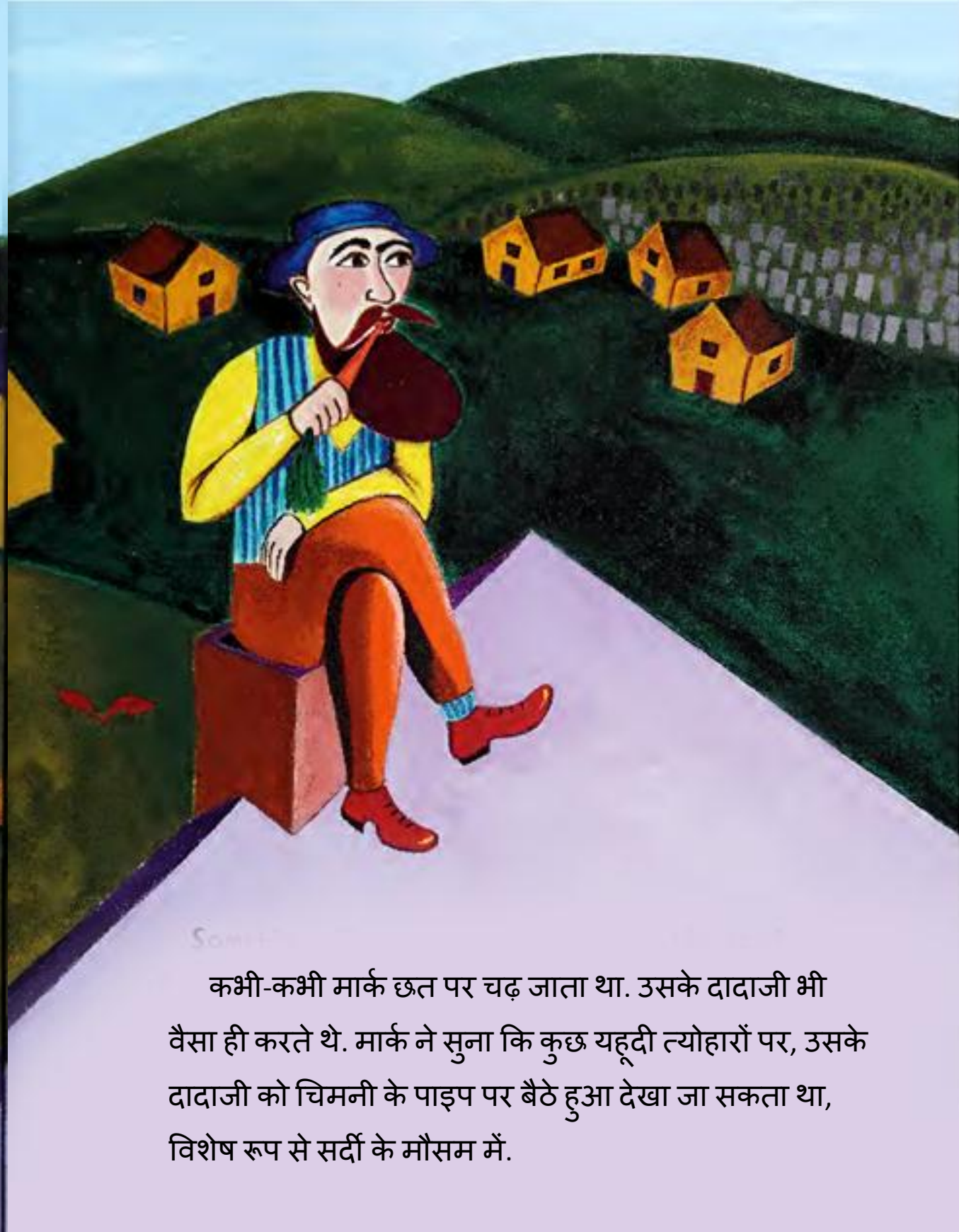




बच्चे का नाम मोशे रखा गया, लेकिन बाद में उसका नाम मार्क में बदल गया. जब वो छोटा था तब मार्क अपनी मुट्ठी में ब्रेड का एक टुकड़ा पकड़कर सड़कों पर घूमता था. यहूदी पादरी और स्कूली बच्चे, संगीतकार और व्यापारियों भी साथ में सड़क पर चलते थे. और जब महिलाएं दुकानों से बाहर निकलती थीं तो उनकी टोकरियाँ चीनी के शंकुओं और नीले कागज में लिपटी मोमबत्तियों से लदी होती थीं.



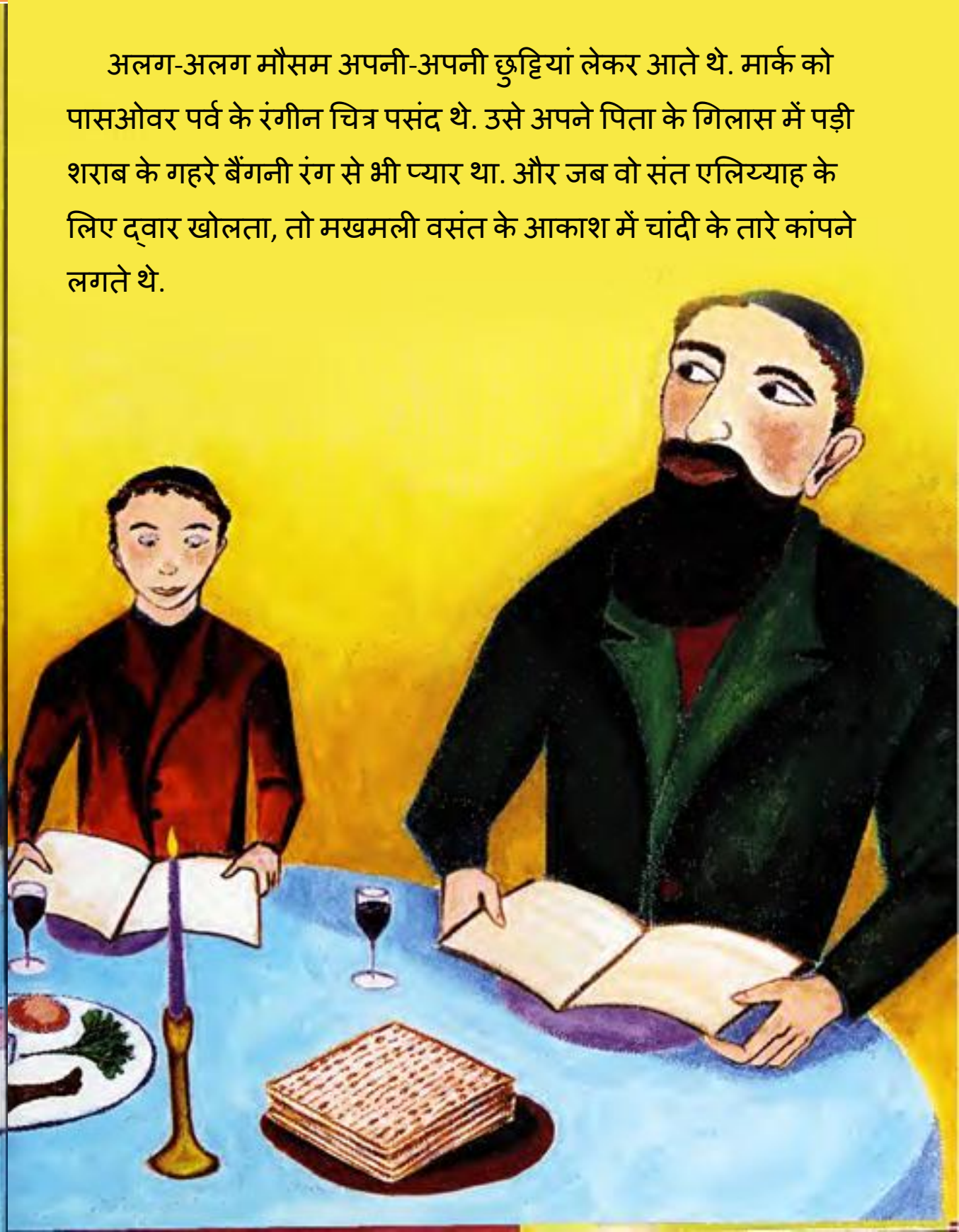
बेहतर दृश्य देखने के लिए मार्क अपनी अटारी की खिड़की पर चढ़ता था. शहर की समृद्धि को देखकर मार्क का दिल भर जाता था - बकरियां और मुर्गियां, कारखाने, कब्रिस्तान और बाकी सब कुछ जो उससे परे था.

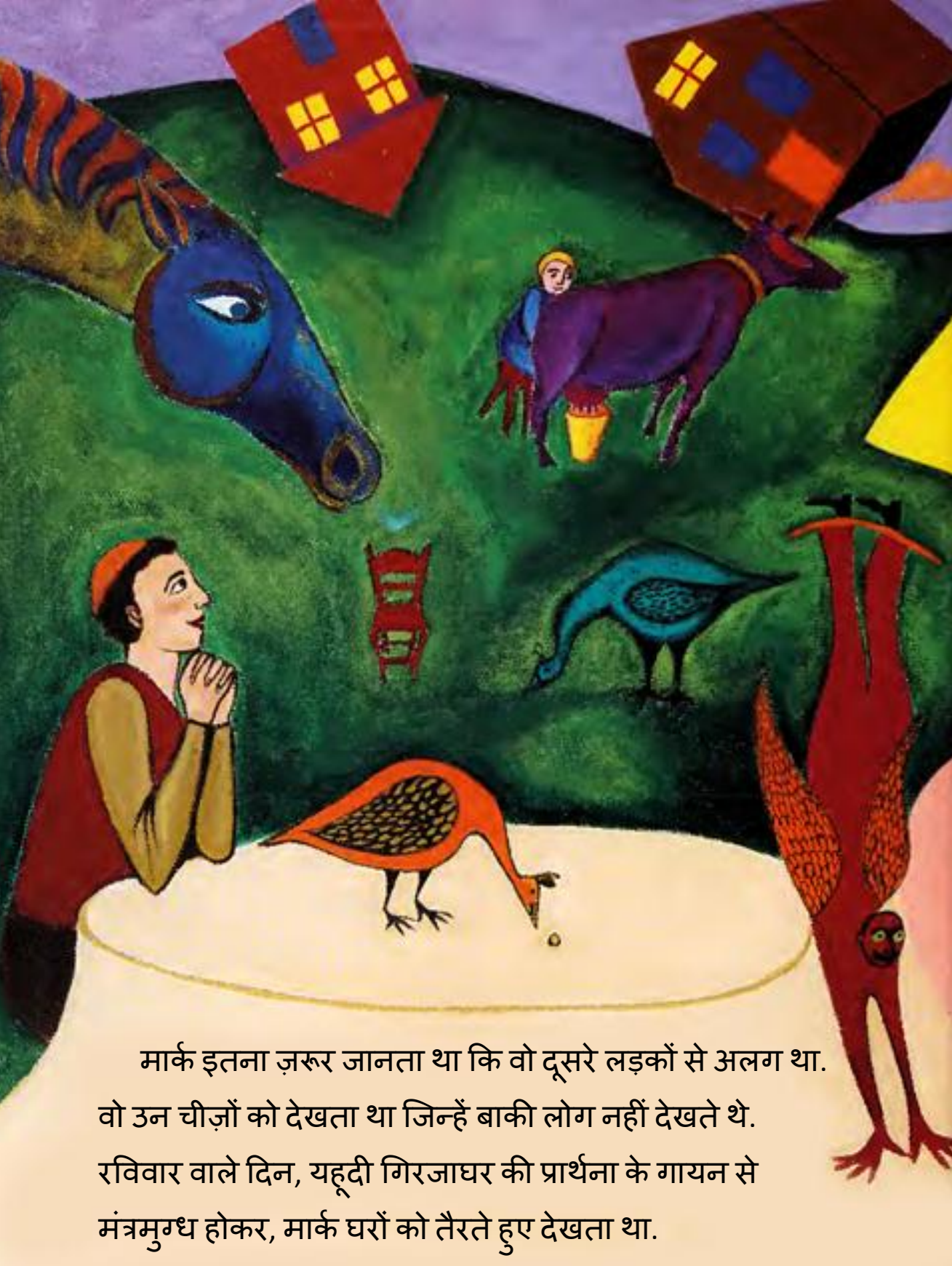


कभी-कभी मार्क छत पर चढ़ जाता था. उसके दादाजी भी वैसा ही करते थे. मार्क ने सुना कि कुछ यहूदी त्योहारों पर, उसके दादाजी को चिमनी के पाइप पर बैठे हुआ देखा जा सकता था, विशेष रूप से सर्दी के मौसम में.

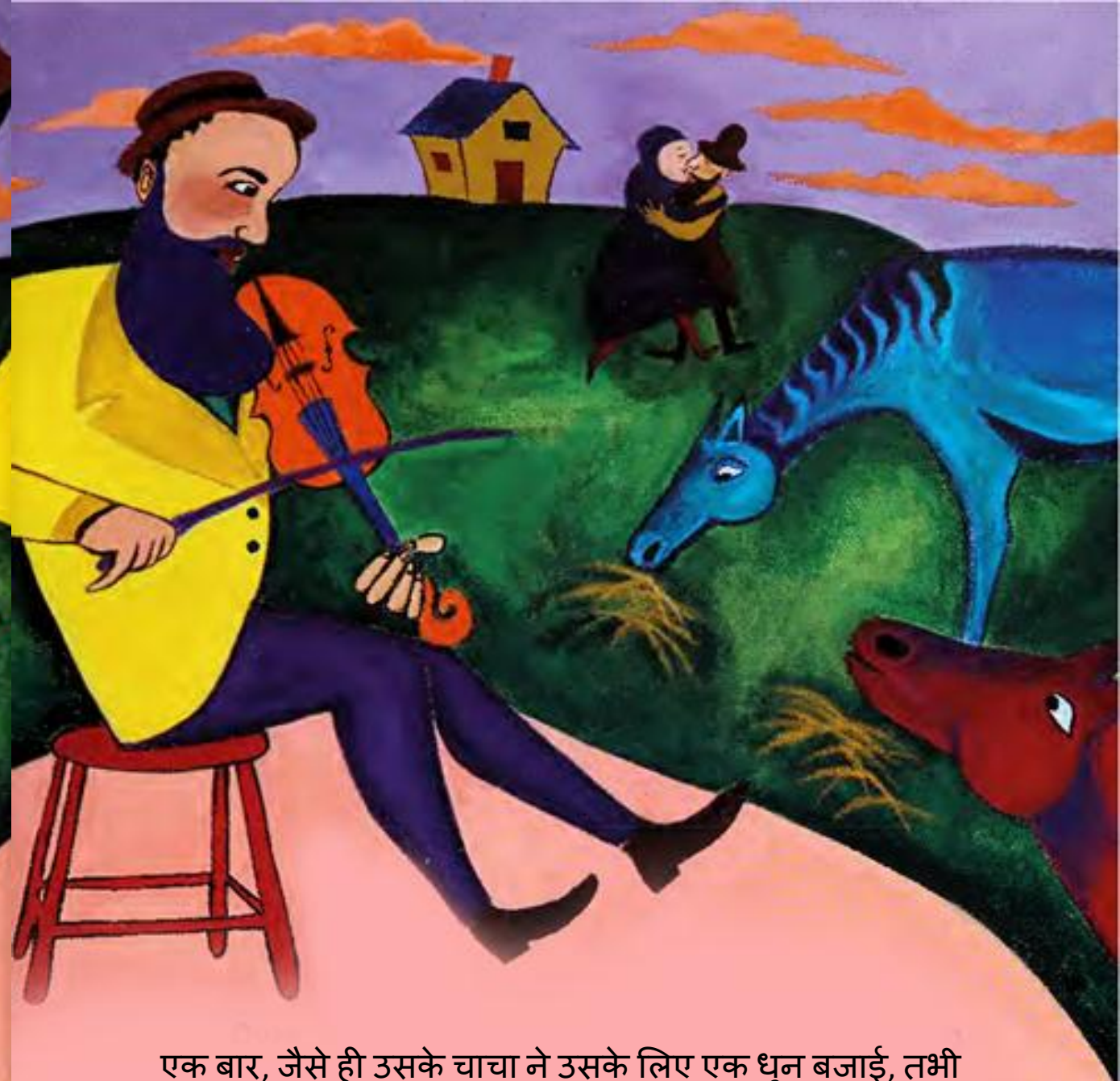


अलग-अलग मौसम अपनी-अपनी छुट्टियां लेकर आते थे. मार्क को पासओवर पर्व के रंगीन चित्र पसंद थे. उसे अपने पिता के गिलास में पड़ी शराब के गहरे बैंगनी रंग से भी प्यार था. और जब वो संत एलिय्याह के लिए द्वार खोलता, तो मखमली वसंत के आकाश में चांदी के तारे कांपने लगते थे.





मार्क इतना ज़रूर जानता था कि वो दूसरे लड़कों से अलग था।
वो उन चीज़ों को देखता था जिन्हें बाकी लोग नहीं देखते थे।
रविवार वाले दिन, यहूदी गिरजाघर की प्रार्थना के गायन से
मंत्रमुग्ध होकर, मार्क घरों को तैरते हुए देखता था।

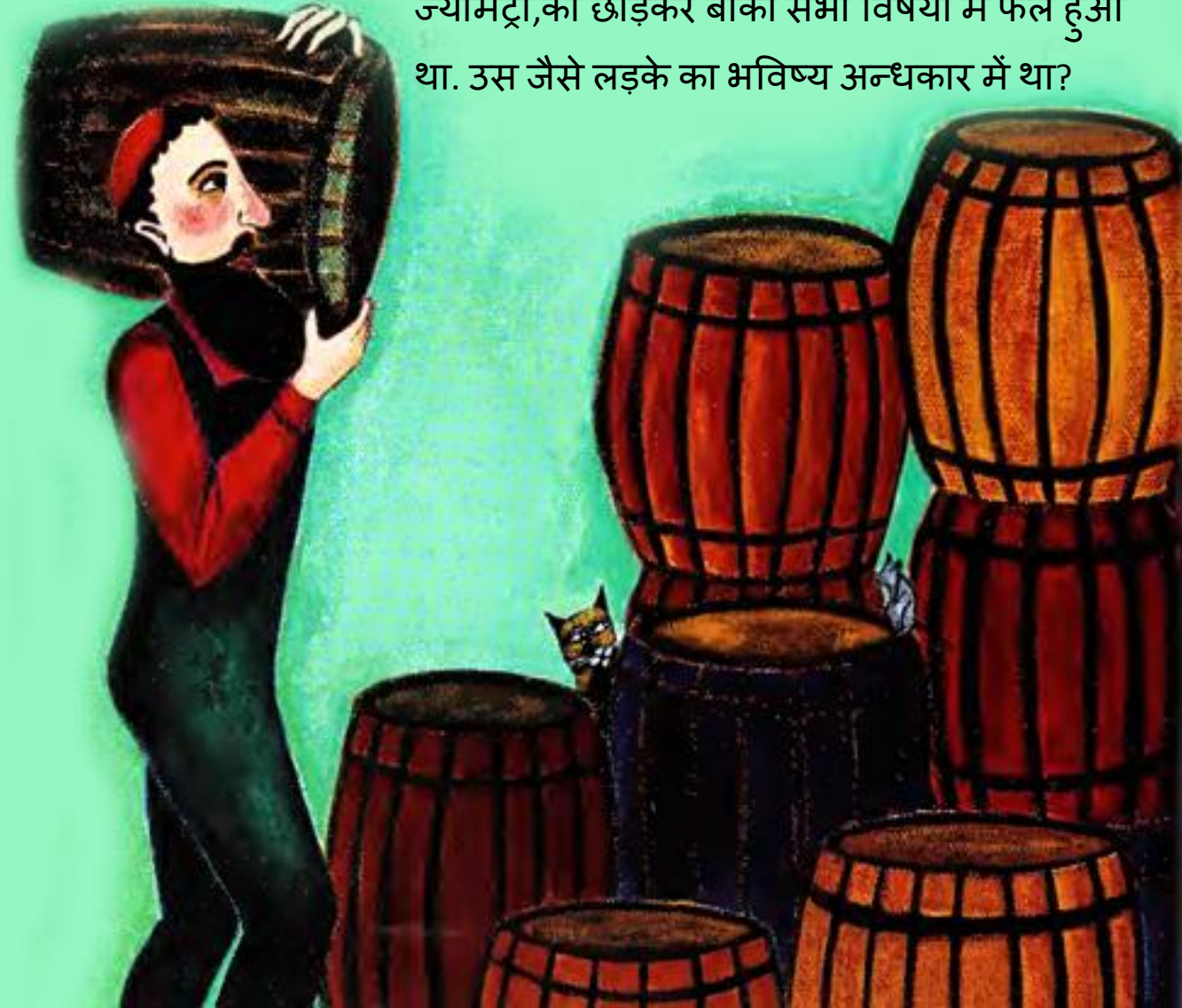


एक बार, जैसे ही उसके चाचा ने उसके लिए एक धुन बजाई, तभी
एक खिड़की खुल गई। मार्क ने शाम के आसमान में बादलों को देखा और
अस्तबल और खेतों को सूंघा।

और एक दोपहर, उसके चाचा की त्वचा का रंग खिड़की से बाहर
सड़क पर बह गया, और फिर जाकर चर्च के गुंबद पर टिक गया।

मार्क ने फैसला किया कि वो कुछ खास करने के लिए पैदा हुआ था. वो अपने पिता की तरह जीवन जीना नहीं चाहता था. उसके पिता सुबह उठकर मंदिर में प्रार्थना करने के लिए जाते थे, फिर एक कारखाने में पूरे दिन हेरिंग मछलियों के बैरल ढोते थे. रात में जब वो घर आते तो उनके हाथ जमे हुए होते थे और कपड़े नमकीन पानी से भीगे होते थे. उसके पिताजी में रात का खाना खाने तक की ताकत नहीं होती थी.

स्कूल में मार्क पाठ सीखने के बाद उसे एक घंटे बाद ही भूल जाता था. हाई स्कूल में वो ड्राइंग और ज्योमेट्री, को छोड़कर बाकी सभी विषयों में फेल हुआ था. उस जैसे लड़के का भविष्य अन्धकार में था?



ऐसा लगता था जैसे वृत्त, रेखाएँ और कोण उसे कहीं ले जाती थीं. कैनवास के लिए पुरानी टाट की बोरियों का उपयोग करके मार्क ने चित्र बनाना शुरू किए.

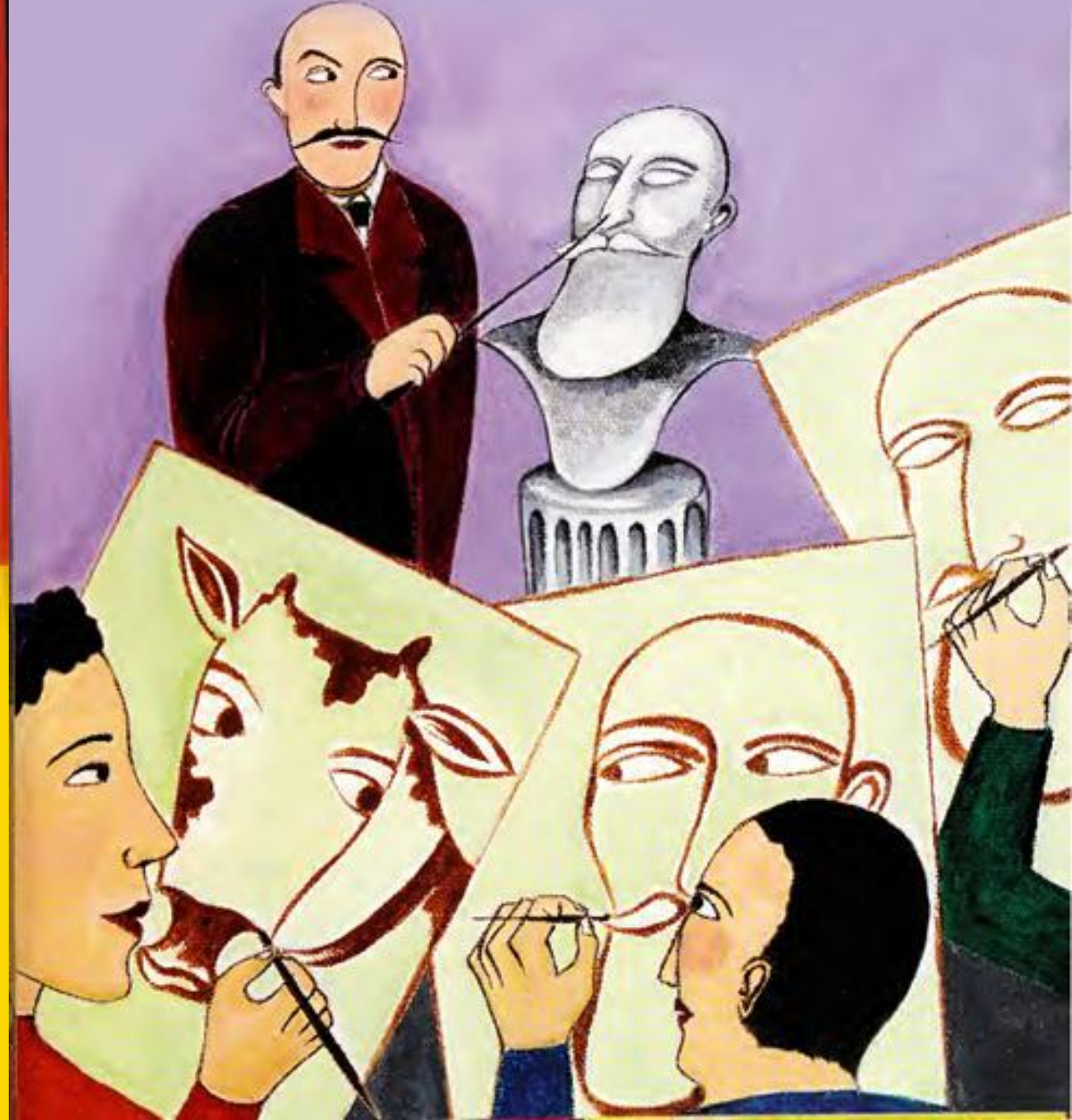
सभी के देखने के लिए वो दीवार पर अपनी तस्वीरें लटका देता था। लेकिन उसका परिवार उन चित्रों को पसंद नहीं करता था। उसके एक चाचा ने मार्क से इसलिए हाथ नहीं मिलाते थे क्योंकि चित्र और बिम्ब बनाना पाप समझा जाता था। एक बार, फर्श धोए जाने के बाद, मार्क की बहनों ने दीवार से उसके चित्र उतारे, उन्हें ज़मीन पर नीचे रखा और उनपर अपने जूते पोंछे।





लेकिन मार्क ड्राइंग करता रहा. एक दिन, जब उसकी माँ रोटी बना रही थी, तो उसने माँ का हाथ पकड़ लिया और रोने लगा, "माँ, मैं एक चित्रकार बनना चाहता हूँ. मैं गोदाम का क्लर्क, अकाउंटेंट, या कसाई नहीं बनना चाहता हूँ. कृपा मुझे बचाओ!"

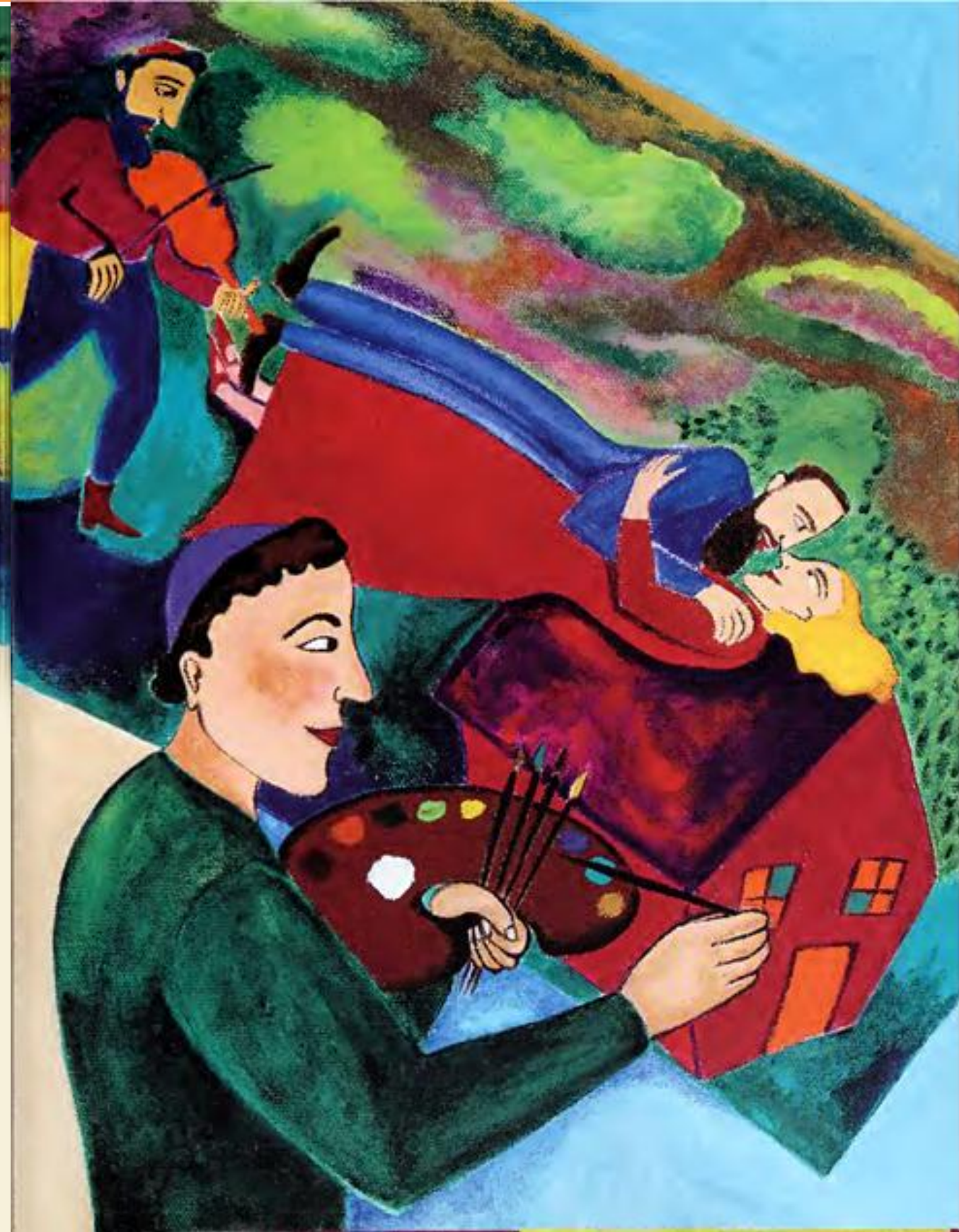
उसके बाद माँ ने उसे आर्ट स्कूल में भेजा. शिक्षक ने उसे प्लास्टर की मूर्तियों की साफ-सुथरी प्रतियां बनाने को कहा. उनका पेंट तंबाकू के दाग के रंग जैसा था. लेकिन मार्क गांव के लोगों और किसानों को ढीली, अनाड़ी रेखाओं और बैंगनी रंग से बनाना चाहता था.





मार्क ने आगे की कला शिक्षा सेंट पीटर्सबर्ग में ली. वहां उसके पास कमरे के किराये के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए वो लोगों के साथ बिस्तर साझा करता था, उनके सोफे पर सोता था या उनकी सीढ़ियों के नीचे की जगह में सो जाता था. वो डबलरोटी और सॉसेज खाने का सिर्फ सपना ही देख सकता था.

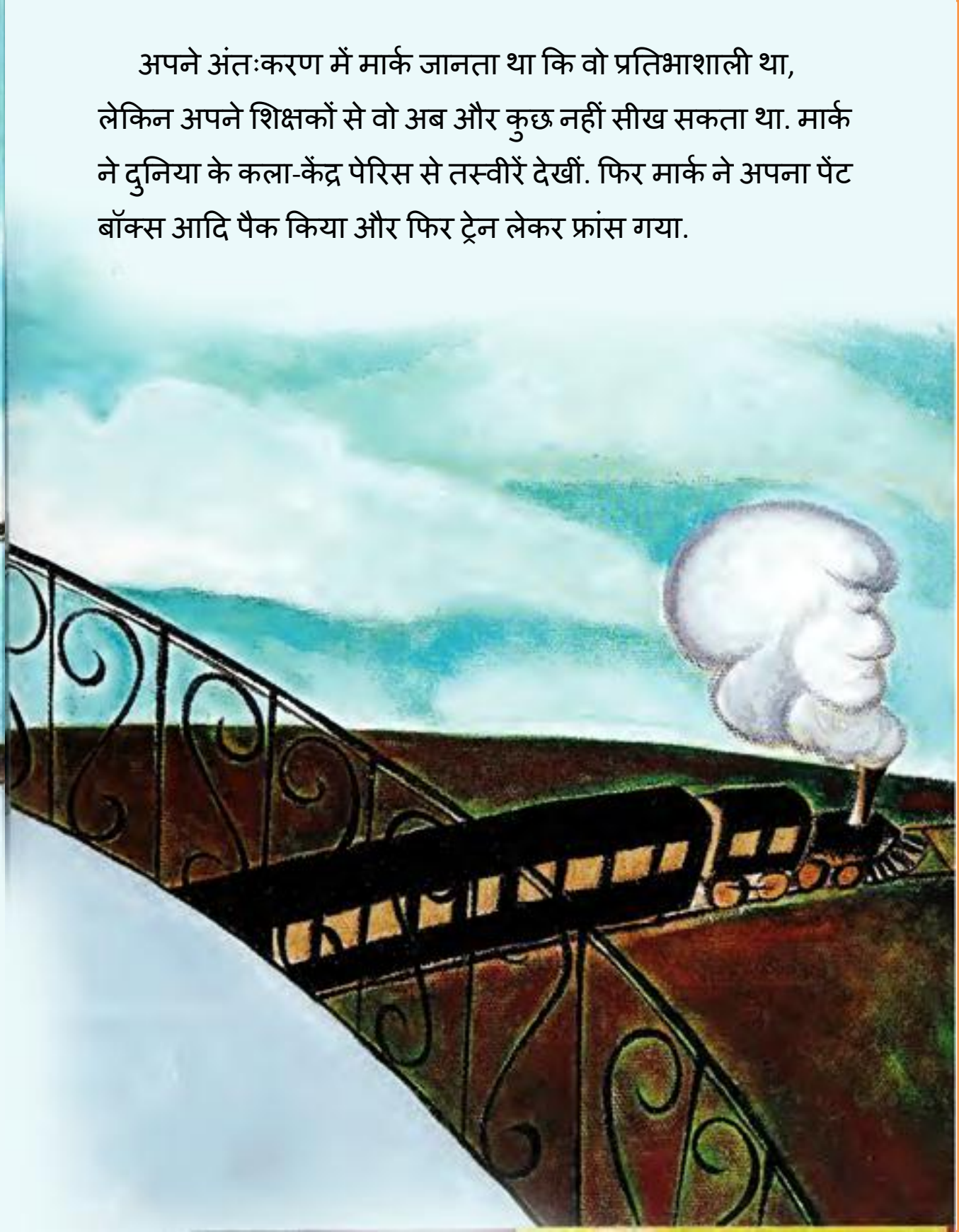
लेकिन जब मार्क पेंटिंग करता था तो वो बेहद खुश होता था. वो हमेशा कुछ-न-कुछ पेन्ट करना चाहता था. उसका गाँव, कारखाने, उसके दादाजी का घर, यहाँ तक कि एक अंतिम संस्कार जो उसने कभी देखा था. एक दृश्य में, उदास आकाश में हरे-पीले रंग की धुंध थी, और एक अकेला संगीतकार छत पर झुककर अपना वाद्ययंत्र बजा रहा था.





एक बार घर की यात्रा के दौरान मार्क की बेल्ला नाम की एक महिला से मुलाकात हुई. बेल्ला अमीर थी और एक अभिनेत्री बनना चाहती थी. बादलों के बदलते आकार को देखने के लिए वे दोनों एक ही पुल पर चल रहे थे. फिर उन्हें एक-दूसरे से प्यार हो गया.

अपने अंतःकरण में मार्क जानता था कि वो प्रतिभाशाली था, लेकिन अपने शिक्षकों से वो अब और कुछ नहीं सीख सकता था. मार्क ने दुनिया के कला-केंद्र पेरिस से तस्वीरें देखीं. फिर मार्क ने अपना पेंट बॉक्स आदि पैक किया और फिर ट्रेन लेकर फ्रांस गया.



पेरिस एक रोमांच शहर था. रूस में आकाश सिलेटी और नीरस था, लेकिन पेरिस में हर चीज़ सूरज की रोशनी में नहाई लगती थी. मार्क, लूवर म्यूजियम के सभी चित्रों को देखने के लिए दौड़ा हुआ गया. उसने कला दालानों में चित्रों को घूरते हुए घंटों बिताए. कुछ में बोल्ड रंग और झुकी हुई आकृतियाँ थीं. उन्होंने उसे आइडिया दिए.



मार्क अपने स्टूडियो में पहुंचा. उसने सूरज के उगने तक, चादरों, मेज़पोशों, यहाँ तक कि नाइटशर्टों पर भी पेंटिंग की.

उसके गाँव के ऊपर बकरियाँ और दूध ले जाने वाली लड़कियां उड़ रही थीं. एक हरे रंग का आदमी एक पारदर्शी गाय से बात कर रहा था. एक कवि अपनी कविता लिखते समय गोल-गोल घूम रहा था, और हवा ने रंग की खिड़की के शीशे चकनाचूर कर दिया था. यह वैसा नहीं था जैसे चीजें वास्तव में दिखती थीं, लेकिन मार्क को वैसा महसूस होता था.



कई साल बीत गए. अंत में एक गैलरी ने मार्क को वन-मैन शो के लिए आमंत्रित किया. लेकिन तब मार्क पेरिस में नहीं रहना चाहता था. उसे बेला की याद सता रही थी. गैलरी में अपनी सारी पेंटिंग छोड़कर, मार्क वापिस रूस अपने घर चला गया.

मार्क के जन्मदिन पर बेल्ला आई. जब मार्क के बेल्ला के लिए दरवाजा खोला, तो उसे नीली हवा, प्रेम और फूल तैरते हुए दिखे. तीन हफ्ते बाद उन्होंने शादी की. मार्क के कैनवस पर अब खुशहाल दंपत्ति हवा में उड़ रहे थे. और नीचे गांव एक मणि की तरह चमक रहा था.



उसके बाद रूस में एक महान युद्ध छिड़ गया. उससे मार्क और बेल्ला रूस में रहने को मजबूर हुए. मार्क ने सबसे पहले अपनी खिड़की के नीचे से गुजरने वाली हर चीज को चित्रित किया - पादरी और भिखारी और उदास बूढ़े. कुछ चमकते लाल, अन्य हरे. लेकिन जल्द ही उसे पेंटिंग बंद करनी पड़ी क्योंकि अब उसे अपने परिवार का पेट पालने के लिए कुछ काम करना था.



फ्रांस छोड़ने के आठ साल बाद, एक दिन मार्क को एक पुराने मित्र का एक पत्र मिला. "क्या आप अभी भी जिंदा हैं?" पत्र में लिखा था. "क्या आप जानते हैं कि आप यहां काफी प्रसिद्ध हैं? आपकी पेंटिंग्स उंची कीमतों पर बिक रही हैं."

लोग, मार्क के जादुई जानवरों को देखकर मुस्कुराए. उन्होंने मार्क के गांव के चमत्कारों पर आहें भरीं. उसके चित्रों के खिलते हुए रंगों ने उनके मन को भावों से भर दिया. इससे पहले किसी ने भी इस तरह पेंटिंग नहीं की थी.

मार्क वापस फ्रांस चला गया. आखिर में मार्क उस काम को करने में सक्षम हुआ जिससे वो हमेशा प्यार करता था.

उसने तब तक काम किया जब तक वो बूढ़ा नहीं हो गया.



जब वे नब्बे वर्ष के थे तब मार्क को एक अद्भुत निमंत्रण मिला. लूव्र म्यूजियम चाहता था कि वो अपनी पेंटिंग्स को प्रदर्शित करे.

उद्घाटन के दिन मार्क संग्रहालय गए. वो बहुत पहले वहां गया था क्योंकि उसके शिक्षकों को वो क्या कर रहा था समझ में नहीं आ रहा था. वो बचपन से ही अपने दिल की भावनाओं को चित्रित करने की कोशिश कर रहा था. मार्क के लिए वो हमेशा सबसे महत्वपूर्ण चीज थी. उसी जूनून ने शायद उसे दुनिया के सबसे महान चित्रकारों में से एक बनाया.

लेखक का नोट

इस कहानी में कई घटनाएं, विशेष रूप से वे जो मार्क चागल के बचपन के दौरान हुई थीं, उनकी आत्मकथा "माय लाइफ" में वर्णित घटनाओं पर आधारित हैं।

मार्क चागल के बारे में

मार्क चागल सपनों, कल्पनाओं और यादों की आंतरिक दुनिया को व्यक्त करने वाले पहले कलाकारों में से एक थे। उनका काम उनके चमकीले रंगों और जादुई कल्पना के लिए जाना जाता है।

मार्क चागल का जन्म 7 जुलाई, 1887 को विटेबस्क के पास, रूसी साम्राज्य के पश्चिमी प्रांत में हुआ था, जिसे अब बेलारूस के नाम से जाना जाता है। उनका दिया गया नाम मोशे सेगल था, जिसे बाद में बदलकर मार्क चागल कर दिया गया। वो एक धार्मिक यहूदी माहौल में पले-बढ़े, जो बाद में उनके अधिकांश कार्यों का विषय बन गया

जब वे उन्नीस वर्ष के थे, तब चागल कला की शिक्षा लेने के लिए सेंट पीटर्सबर्ग गए। एक उदार संरक्षक की सहायता से, वो पश्चिमी दुनिया के कला केंद्र, पेरिस चले गए। चागल क्यूबिज़्म के ज्वलंत रंगों और ज्यामितीय संरचनाओं और अन्य आधुनिक तकनीकों से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने अपनी तरह की पेंटिंग विकसित की।



मार्क चागल, और गांव, 1911

1914 में एक बर्लिन आर्ट गैलरी ने चागल के पहले वन-मैन शो का आयोजन किया। उसी वर्ष, उन्होंने रूस की यात्रा की। वो इस बात से अनजान थे कि प्रथम विश्व युद्ध का प्रकोप उनकी वापसी को रोक देगा। बेल्ला रोसेनफेल्ड से उनकी शादी ने, उनके प्रेम सम्बन्धी काल्पनिक चित्रों की एक श्रृंखला को प्रेरित किया। 1917 में रूसी क्रांति के बाद, चागल ललित कला के कमिश्नर बने और बाद में, एक स्थानीय कला अकादमी के निदेशक बने।

1923 में पेरिस लौटने के बाद के वर्षों में, चागल एक प्रसिद्ध लिथोग्राफर बन गए। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वो अमेरिका में रहते थे, और बेल्ले के लिए सेट और वेशभूषा डिजाइन करते थे।

युद्ध समाप्त होने के बाद चागल फ्रांस वापस चले गए। अपने बाद के वर्षों में उनके द्वारा बनाए गए कार्यों में पेरिस ओपेरा की छत की पेंटिंग, न्यूयॉर्क शहर में मेट्रोपॉलिटन ओपेरा के लिए भित्ति चित्र, यरुशलम में हिब्रू विश्वविद्यालय के लिए स्टैंड-ग्लास खिड़कियां और इज़राइली संसद भवन के लिए मोज़ाइक और टेपेस्ट्री शामिल थे।

नब्बे वर्ष की आयु में चागल उन बहुत कम जीवित कलाकारों में से एक बन गए जिन्हें लूव्र म्यूजियम में प्रदर्शित किया गया। उस प्रसिद्ध कला संग्रहालय जिसे उन्होंने पेरिस की अपनी पहली यात्रा पर एक युवा व्यक्ति के रूप में देखा था। उन्होंने 28 मार्च 1985 को अपनी मृत्यु तक काम किया।

पेंटिंग के बारे में उनकी यह सलाह थी; "आपको इस विचार के साथ पेंटिंग करनी चाहिए कि आपकी आत्मा का कुछ उसमें प्रवेश करेगा। फिर एक तस्वीर पैदा होनी चाहिए और जिसे किसी जीवित चीज की तरह खिलना चाहिए।"



